17 नवम्बर 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 16 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
नवम्बर (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

अष्टाह्निका महापर्व सानन्द संपन्न

(1) दिल्ली : यहाँ पर्व के अवसर पर ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा दोनों समय मोक्षमार्गप्रकाशक एवं समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(2) गुना (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्यरत्न' द्वारा 'चरणानुयोग से स्वास्थ्य रक्षा' एवं 'समयसार' पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही ब्र. आरती दीदी द्वारा समाधि भावना पर प्रवचन हुये। डॉ. दीपकजी द्वारा अहिंसक चिकित्सा शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें 275 रोगियों को नि:शुल्क औषधि दी गई। **– सुरेशचंद जैन**

(3) अजमेर (राज.) : यहाँ पुरानी मण्डी स्थित सीमंधर जिनालय में पर्व के अवसर पर श्री निर्मलकुमारजी सिंघई सागर द्वारा प्रात: प्रवचनसार, दोपहर में शंका-समाधान एवं रात्रि में समयसार पर प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित प्रवचनसार मंडल विधान का आयोजन पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल के निर्देशन में किया गया। **– प्रकाशचंद पाण्ड्या**

(4) छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : यहाँ नई आबादी गांधीगंज स्थित श्री पार्श्वनाथ जिनालय में पर्व के अवसर पर प्रवचनसार मंडल विधान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी जैन के प्रवचनों का लाभ मिला। **– दीपकराज जैन**

आंध्रप्रदेश में तत्त्वप्रचार

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक अंकुरजी शास्त्री भोपाल द्वारा दिनांक 25 से 31 अक्टूबर तक आंध्रप्रदेश के काकीनाड़ा, एलूर और विजयवाड़ा में शिक्षण शिविर लगाकर तत्त्वप्रचार किया गया। उक्त स्थानों पर श्वेताम्बर मतावलंबियों की अधिकता होने पर भी सभी ने गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को, विशुद्ध अध्यात्म को रुचिपूर्वक सुना एवं प्रसन्नता व्यक्त की। अंकुरजी शास्त्री द्वारा उपस्थित जनसमुदाय को टोडरमल स्मारक का परिचय दिया गया, जिसकी सभी ने मुक्तकंठ से प्रशंसा की। इसी दौरान एलूर में पाँच श्वेताम्बर साध्वियों को भी जैनदर्शन के मूलभूत सिद्धांतों के बारे में कक्षा के माध्यम से बताया गया। सभी ने भविष्य में भी इसी प्रकार शिविर आयोजित करने की भावना व्यक्त की।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय की साप्ताहिक गोष्ठियों के अन्तर्गत दिनांक 4 नवम्बर को '**कर्म एवं कर्मास्रव**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता कु.प्रतीति पाटील ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में प्रतीक हेरावत (उपाध्याय वरिष्ठ), अंकुर जैन (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं यश जैन खुरई (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे। मंगलाचरण अनर्घ्य जैन विदिशा ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अंकित जैन व अनेकान्त जैन ने किया।

दिनांक 5 नवम्बर को '**वस्तु-स्वातंत्र्य**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में समर्थ जैन विदिशा (शास्त्री प्रथम वर्ष), संयम जैन दिल्ली (उपाध्याय वरिष्ठ) एवं संस्कार जैन बटियागढ (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे। मंगलाचरण शाश्वत जैन भोपाल ने एवं संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के प्रशान्त जैन व अभय जैन ने किया। दोनों गोष्ठियों में आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

विचार गोष्ठी का आयोजन

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 5 नवम्बर को जैन अध्यात्म के प्रतिष्ठापक आचार्य कुन्दकुन्द के पद-आरोहण दिवस पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रात: विशेष पूजन के पश्चात् पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील द्वारा आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन पर विशेष प्रकाश डाला गया। रात्रि में संयम जैन नागपुर, नयन जैन बरायठा, अमन जैन दिल्ली, पीयूष जैन टडा, सौरभ दुरुगकर, अनुभव जैन खनियांधाना आदि छात्रों ने अपनी कविताओं को प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त आकाश जैन, पारस जैन व अमन जैन ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन शुभांशु जैन कोटा एवं शशांक जैन दलपतपुर ने किया। मंगलाचरण वीकेश जैन व अनेकान्त जैन ने किया। **– जिनकुमार शास्त्री**

... और तत्त्वनिर्णय न करने में किसी कर्म का दोष है नहीं, तेरा ही दोष है; परन्तु तू स्वयं तो महन्त रहना चाहता है और अपना दोष कर्मादिक को लगाता है, सो जिनआज्ञा माने तो ऐसी अनीति सम्भव नहीं है। **– मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ 311**

सम्पादकीय –

मेरी जीवन यात्रा के कुछ प्रेरक प्रसंग

2

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

यह सब लिखने का उद्देश्य उनके प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापन के साथ यह है कि जब मेरे माता–पिता जैसे अनपढ व्यक्तियों का जीवन इतनी प्रतिकूलताओं में एवं साधनों के अभाव में और ऐसी विषम परिस्थितियों में जिनागम के आलम्बन से अन्ततोगत्वा इतना सुखद, शान्त और समता सहित बन गया तो सही दिशा में लिये गये संकल्प से और उसको दृढतापूर्वक निभाने से अन्य व्यक्ति अपना जीवन सफल क्यों नहीं कर सकते? कर सकते हैं, अवश्य कर सकते हैं, अत: कष्टों की परवाह न करके दृढसंकल्प कर लें, ठान लें और आगे बढें। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है –

'' जितने कष्ट कण्टकों में है जिसका जीवन सुमन खिला।
गौरव गंध उन्हें उतना ही यत्र–तत्र–सर्वत्र मिला।।''

मुझसे मेरे माता–पिता को क्या अपेक्षायें रही होंगी, मेरे भविष्य के बारे में वे और दूसरे पारिवारिक व्यक्ति क्या सोचते होंगे, उन्हें मुझमें क्या विशेषताएं दिखती होंगी? यह तो मैं जानता ही नहीं हूँ; अपने भविष्य के बारे में भी मैंने यह सब नहीं सोचा था कि मेरा मनुष्य भव इतना सार्थक हो सकता है और मैं अपने तथा दूसरों के जीवन को सुखद बनाने में इतना उपयोगी सिद्ध हो सकता हूँ, प्रेरक निमित्त बन सकता हूँ। इसमें मेरी होनहार तो प्रमुख कारण है ही, तदनुसार उसी जाति का पुरुषार्थ, प्रयत्न और परिश्रम भी रंग लाया है। अत: यदि हम ठान लें तो दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है। हमारे पिताजी ने ठान लिया तो वे सफल हो ही गये। मैंने भी उनका पदानुसरण करके परिश्रम की परवाह न करते हुए जो काम करने का संकल्प किया, उसमें असफल नहीं हुआ।

मेरी लौकिक पढाई, आध्यात्मिक उन्नति में और साहित्यिक सृजन में मेरे अनन्य शुभचिन्तक अनुज हुकमचंद का उल्लेखनीय सत्परामर्श और सहयोग सदैव रहा है।

जीवन के प्रारम्भ में आर्थिक स्थिति अत्यन्त साधारण रहने पर भी हमारे दोनों भाईयों के बीच अर्थ कभी अनर्थ का कारण नहीं बन सका। जैसा कि आज के युग में भाईयों में संघर्ष होते देखा जाता है। जो कुछ भी उपलब्ध हुआ, उससे मिल–जुलकर सम्पूर्ण परिवार का भरण–पोषण होता रहा।

विदिशा में बीते 17 वर्षों में मैंने प्रतिदिन लगभग 6 घंटे विद्यालय में लौकिक शिक्षा, 3 घंटे प्रतिदिन सुबह–शाम प्रवचन व पाठशाला, समय–समय पर सामाजिक आयोजन आदि तथा आवश्यक घरेलू काम करते हुए जो बी.ए., एम.ए., बी.एड., साहित्यरत्न की लौकिक पढाई की, वह बिना कठिन परिश्रम और दृढ संकल्प के संभव नहीं थी। मैं विदिशा पहुँचने के पहले तो मात्र शास्त्री, न्यायतीर्थ और हायर सैकण्डरी परीक्षा पास ही था। मेरी भाँति यदि मेरे पाठक भी आत्महित हेतु स्वाध्याय करना ठान लें तो कुछ भी असंभव नहीं है।

माता–पिता का अपूर्व पुरुषार्थ – चारों ओर जलती राग–द्वेष की ज्वाला के मध्य जब मैं स्वयं को उससे बहुत कुछ अप्रभावित रहता देखता हूँ, शांति और शीतलता का अनुभव करता हूँ तो मुझे अपने पूज्य पिताजी की वह भूमिका याद आये बिना नहीं रहती, जिसमें उन्होंने भारी कष्ट झेलकर भी अनन्त प्रतिकूल परिस्थितियों में हमें धार्मिक अध्ययन करने का अवसर दिया। वे स्वयं धर्मात्मा प्रकृति के तो थे; परन्तु उन्हें धर्म का ज्ञान नहीं था, क्योंकि वहाँ ज्ञानार्जन का साधन ही नहीं था, साधु–सन्तों का समागम भी नहीं होता था, फिर भी वे यथासंभव पूजा–पाठ करते थे और आशा से अधिक ईमानदार तथा दयालु प्रकृति के थे। दुर्भाग्य से उनकी ढाई वर्ष की उम्र में ही उनके पिताजी अर्थात् हमारे दादाजी का निधन हो गया था, इस कारण उन्हें बचपन से पचपन वर्ष तक धार्मिक दृष्टि से अपने व्यक्तित्व के विकास का कोई अवसर नहीं मिला था और वे अधिक पढ भी नहीं सके थे। संभवत: वे अपनी उस कमी को अगली पीढी में संप्रेषित नहीं करना चाहते थे, इसीकारण वे हम लोगों को पूरा पढाना और आगे बढाना चाहते थे। उन्हें जैनत्व के धार्मिक संस्कार तो अपनी माँ से मिल ही रहे थे, साथ ही कम पढे–लिखे होने पर भी उनमें जन्मजात ऐसी प्रतिभा थी कि वे न केवल अपने गाँव में सम्मानित थे, बल्कि आस–पास के अनेक गाँवों में भी उनकी अलग पहचान थी। वे नैतिक संदेश देने वाले किस्से–कहानियों के तो भंडार थे। बात–बात में किस्से कहानियाँ सुनाकर वे लोगों को नैतिकता के संदेश देना चाहते थे, कहने का ढंग भी उनका मनोरंजक था। इसकारण फुरसत के समय सैंकड़ों लोग उनके किस्से सुनने हमारे मौहल्ले में इकट्ठे हो जाया करते थे। इस कारण वे जनप्रिय तो थे ही, अपने सरल स्वभाव के कारण अजातशत्रु भी थे।

एकसाथ दो समाचार – जब हम न्यायतीर्थ की परीक्षा देने श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन विद्यालय राजाखेड़ा (राज.) से पूर्व घोषित परीक्षा केन्द्र इन्दौर को प्रस्थानकर गये तब राजाखेड़ा

कुन्दकुन्द विद्यालय में यह सूचना पहुंची कि न्यायतीर्थ परीक्षा का केन्द्र इन्दौर निरस्त करके कलकत्ता कर दिया है। यह सूचना जब हमें इन्दौर में मिली, तब इन्दौर से कलकत्ता पहुंचने का कोई भी साधन न होने से हम परीक्षा देने से वंचित रह गये। उसी दिन पिताजी द्वारा दूसरा समाचार यह मिला कि तुम्हारी सगाई तय कर दी गई है, अत: परीक्षा देकर सीधे घर आ जाओ। यद्यपि यह सूचना लौकिक दृष्टि से शुभ थी, बहुत समय से अस्वस्थ माँ की तमन्ना पूरी हो रही थी, इसकारण मामाजी का पूरा परिवार खुश था, परन्तु परीक्षा निरस्त हो जाने से वह शुभ समाचार भी मुझे सुखद नहीं लगा। घंटे-दो घंटे अन्तर्द्वन्द चलने के बाद अन्त में परिस्थितियों से समझौता कर मैंने किसी से कुछ न कह सगाई की सूचना को सहज स्वीकार कर लिया और समय पर घर पहुँच गया।

वस्तुत: न्यायतीर्थ का पाठ्यक्रम दो वर्ष का है; परन्तु माँ की बीमारी के कारण हम उसे एक वर्ष में ही पूरा करके पढाई से निवृत्त हो जाना चाहते थे, ताकि हम उनका इलाज और घर का कामकाज संभाल सकें। इसी कारण माँ को मेरी शादी करने की जल्दी थी। पर चाहने से क्या होता है, होता तो वही है जो होना होता है। होनी को कोई टाल नहीं सकता। न्यायतीर्थ करने में दो वर्ष लगने थे सो लगे। उसमें किसी की कुछ नहीं चली। इधर शादी उसी वर्ष होनी थी सो वह भी हो ही गई।

शादी के बाद में दाम्पत्य जीवन के सुखद संयोगों की जैसी कल्पनाएं सामान्य वर-वधुओं में होती हैं, पारिवारिक उत्तरदायित्व और पढाई पूरी करने के कारण वैसा कुछ भी नहीं हुआ।

मेरी पत्नी कमला ने उस छोटी सी 14 वर्ष की उम्र में अपने माता-पिता के प्यार को और सखी-सहेलियों के स्नेह को तिलांजलि देकर मेरे संकेतों के अनुसार मेरे बिना अकेले गाँव में रहकर सास-स्वसुर की सेवा करते हुए एक मूक साधिका जैसा जीवन जीया, कठोर से कठोर काम किये और मुझे अधूरी पढाई पूरी करने हेतु निश्चिन्त रखकर तथा आजीविका निर्वाह हेतु अकेले बाहर रहने में भी जो सहयोग दिया, वह साधारण नारी का काम नहीं था। मैंने जो कुछ निर्देश दिये, उन्हें अनेक कष्ट सहकर भी शिरोधार्य किया।

इतना ही नहीं शादी के 12 वर्ष बाद भी गृहकार्य का निर्वाह करते हुए मेरे कहने पर दो वर्ष में प्रौढ महिला के रूप में हायर सैकण्डरी तथा बी.टी.आई. की ट्रेनिंग करके 12 वर्ष तक शासकीय सेवा में अध्यापन कार्य करके परिवार के खर्च चलाने में खुशी-खुशी साथ दिया और मेरे कहने पर ही शासकीय सेवा को तिलांजलि भी दे दी। साथ ही धार्मिक अध्ययन करके धार्मिक कक्षाओं का संचालन भी सफलतापूर्वक कर रही है। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि वह तत्त्वज्ञान के बल पर प्रतिकूल परिस्थितियों में सहज रहने का प्रयत्न करती है, तत्त्वज्ञान को केवल परिभाषाओं तक सीमित न रखकर उसका जीवन में प्रयोग भी करती है।

मुझे एक घटना और याद आती है, जब हम दोनों भाई अध्ययन काल में किसी त्यौहार पर घर आये, उस समय मेरी पत्नी (कमला) पीहर गई थी। घर आने पर पिताजी ने भाई हुकमचंद से कहा -''तू भाभी को ले आ।'' पिताजी के आदेशानुसार वे गये; परन्तु उसके माता-पिता ने बिना कारण बताये नहीं भेजा। मुझे कारण कुछ समझ में नहीं आया तो मैं स्वयं उसे लेने पहुँचा और उसके पिताजी से न भेजने का कारण जानना चाहा तो उन्होंने नाराजगी प्रकट करते हुए कहा -''एक बार कह दिया न कि नहीं भेजना।'' मैंने प्रेम से पुन: पूछा -''कब तक नहीं भेजना?'' तो एकदम क्रोधित होते हुए बोले - ''कभी नहीं भेजना, वह वहाँ परेशान होती है। आप लोग तो दो-चार दिन को आये हो, फिर चले जाओगे। वह वहाँ अकेली बहुत दु:ख पाती है। जो काम उसने कभी नहीं किये, दिन-रात उन्हीं कामों में जुटा रहना पड़ता है। अब हमसे उसका दु:ख देखा नहीं जाता।'' **(क्रमश:)**

राष्ट्रीय जैन युवा सम्मेलन -

सेमिनार में एस. पी. भारिल्ल

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) : यहाँ भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक-2018 की पूर्व बेला में आयोजित विविध सम्मेलनों के अन्तर्गत दिनांक 28 व 29 अक्टूबर को राष्ट्रीय जैन युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इस प्रसंग पर आयोजित सेमिनार में देश के हजारों युवाओं की उपस्थिति में आध्यात्मिक प्रवक्ता, लीडरशिप गुरु, अतिलोकप्रिय मोटिवेशनल वक्ता, इन्दिरा गांधी प्रियदर्शिनी अवार्ड से सम्मानित **श्री एस.पी. भारिल्ल, जयपुर** द्वारा **'इन भावों का फल क्या होगा'** विषय पर आकर्षक व्याख्यान हुआ।

इसी अवसर पर टोडरमल स्नातक परिषद् के युवा विद्वान **पण्डित सौरभजी शास्त्री, इन्दौर** द्वारा **'क्षमा की ताकत'** विषय पर अंग्रेजी भाषा में प्रभावक व्याख्यान का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला। सायंकाल डॉ. संजीवजी गोधा का जैन एकता पर संक्षिप्त उद्बोधन हुआ।

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (5)

हमें सुखी तो होना है पर क्या हम यह भी जानते हैं कि ''सुख क्या है''?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

हम सभी लोग सदा व्यस्त रहते हैं, किसी के वक्त की कीमत चाहे कुछ भी हो, किसी की बहुत अधिक या किसी की बहुत ही कम, बिलकुल ही नगण्य; पर वक्त किसी के पास नहीं है।

क्या आप जानते हैं कि आप और हम सभी किस काम में इतने व्यस्त रहते हैं?

इतना पूछते ही एक लम्बी लिस्ट हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती है– ''कमाना–खाना, पढना–लिखना, खेलकूद, कसरत–व्यायाम, सोना–जागना, घूमना–फिरना, मनोरंजन आदि। यदि हम इन्हीं का विस्तार करें तो इतनी लम्बी लिस्ट बन जायेगी, जिसका कोई अंत नहीं।

क्या आप अपने उक्त सभी क्रियाकलापों और व्यस्तता के कारणों को संक्षेप में परिभाषित कर सकते हैं?

नहीं! आखिर करें कैसे, कारण (काम) ही इतने अधिक हैं कि उन्हें संक्षेप में कहें कैसे?

आइये मैं आपकी मदद करता हूँ –

''हम मात्र अपने सुखी होने के उपायों में व्यस्त रहते हैं''

क्या आप मेरी राय से सहमत हैं?

जरा गहराई से विचार करें तो हम पायेंगे कि हमारे छोटे–बड़े सारे कार्य, सारे क्रियाकलाप और प्रयत्न अंतत: मात्र सुखी होने के लिये होते हैं, उनका अन्य कोई प्रयोजन नहीं होता है।

हम सोते हैं तो सुखी होने के लिये और फिर सोकर जागते हैं तो वह भी सुखी होने के लिये ही। जब हम अपने विभिन्न क्रियाकलाप के कारण थकान से पीड़ित होते हैं तो सुखी होने के लिये सोना चाहते हैं और जब सोते–सोते थक जाते हैं तो सुखी होने के लिये जाग जाते हैं। इसी प्रकार जब हम भूख से व्याकुल हो जाते हैं तो वह व्याकुलता जनित दु:ख दूर करके तृप्ति का सुख पाने के लिये भोजन करते हैं और फिर भोजन करते–करते हमारा पेट जवाब देने लगता है, मन ऊबने लगता है, उबकाई आने लगती है तो एक बार फिर सुखी होने के लिये हम भोजन करना बंद कर देते हैं। हम खड़े–खड़े थक जाते हैं तो उस थकान के दु:ख से बचकर सुखी होने के लिये बैठ जाते हैं और जब बैठे–बैठे भी थक जाते हैं तो लेट जाते हैं। जब एक करवट से लेटे–लेटे थक जाते हैं तो करवटें बदलने लगते हैं और फिर जब उससे भी राहत मिलनी बंद हो जाती है तो एक बार फिर सुखी होने के लिये फिर से उठ खड़े होते हैं।

मैं पूछता हूँ कि यदि खड़े होने में ही सुख मिलता है तो खड़े ही रहते न, पहिले बैठे ही क्यों थे, लेटे ही क्यों थे? और यदि बैठने और लेटने से सुख मिलता है तो फिर अब दुबारा खड़े क्यों होना चाहते हो? क्या फिर से दु:खी होने के लिये?

नहीं!

हम बैठे और लेटे भी थे सुखी होने के लिये और फिर खड़े होते हैं तो वह भी सुखी होने के लिये ही। इसप्रकार हम पाते हैं कि आखिर हमारे सारे के सारे क्रियाकलाप मात्र दु:ख से छूटने के लिये और सुखी होने के लिये ही होते हैं। उनका अन्य कोई भी प्रयोजन नहीं है।

आप कह सकते हैं कि हम लिखते–पढते हैं, व्यापारादिक करते हैं उनका प्रयोजन तो ज्ञान प्राप्त करना और धन कमाना होता है, तब आप कैसे कह सकते हैं कि हमारे सारे क्रियाकलापों का एक मात्र प्रयोजन मात्र सुखी होना ही है?

भाई साहब! यदि जरा गहराई से विचार करेंगे तो पायेंगे कि हमें पढ–लिखकर ज्ञान प्राप्त करना है धन कमाने के लिये और धन हमें चाहिये भोग सामग्री जुटाने के लिये और अंतत: उस भोग सामग्री का उपभोग करके हम सुखी होना चाहते हैं। इसप्रकार हम पाते हैं कि यदि सीधे–सीधे नहीं तो आड़े–तिरछे होकर भी हमारे हर प्रकार के क्रियाकलापों का संबंध मात्र हमारी सुख की चाहत से ही है।

अब यह तथ्य स्थापित हो जाने के बाद कि बड़े–बड़े क्रियाकलाप तो ठीक पर यदि हम तनिक भी हिलते–डुलते हैं तो उसके पीछे भी एकमात्र प्रयोजन सुखी होना ही होता है; एक सबसे बड़ा प्रश्न यह उपस्थित होता है कि अनादिकाल से आज तक यदि हमारे सारे ही प्रयत्न मात्र सुखी होने के लिये ही हैं तो क्या हम सुखी हो पाये हैं?

जाहिर है कि नहीं, तो क्यों नहीं?

जानने के लिये पढें अगला अंक ... **(क्रमश:)**

डॉ. वीरसागरजी सम्मानित

नई दिल्ली : यहाँ कुन्दकुन्द भारती में आयोजित विशाल कार्यक्रम में श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के जैनदर्शन के वरिष्ठ आचार्य, दर्शन संकाय के पूर्व संकाय–प्रमुख डॉ. वीरसागरजी जैन को उनके दार्शनिक एवं साहित्यिक अवदान के लिये अहिंसा इन्टरनेशनल जैन साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर अहिंसा इन्टरनेशनल के पदाधिकारियों द्वारा उन्हें प्रशस्ति–पत्र, शॉल, श्रीफल व राशि भेंट की गई। ज्ञातव्य है कि डॉ. वीरसागरजी को उनके ग्रंथों पर तथा जैनधर्मदर्शन के क्षेत्र में उनकी सेवाओं के लिये उमास्वामी पुरस्कार, ब्रह्मगुलाल पुरस्कार, ऋषभांचल पुरस्कार, महावीर पुरस्कार तथा वात्सल्य रत्नाकर आदि अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर –

नियमसार विधान एवं विद्वत्गोष्ठी संपन्न

देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ लाम रोड स्थित कहान नगर में अष्टाह्निका पर्व के अवसर पर पण्डित अभयजी शास्त्री द्वारा रचित नियमसार मंडल विधान एवं विद्वत्गोष्ठी का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर (MONA - Mumukshu of North America) द्वारा '**समयसार परिशिष्ट व प्रवचनसार परिशिष्ट**' विषय पर एक विद्वत्गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अरुणजी शास्त्री जयपुर, श्री चेतनभाई राजकोट तथा स्थानीय विद्वान पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री व ब्र.हेमचंदजी 'हेम' के प्रवचनों का लाभ मिला।

गोष्ठी श्री रजनीभाई गोसालिया के निर्देशन में संपन्न हुई। विधि–विधान के कार्य पण्डित उर्विशजी शास्त्री कोटा के सहयोग से संपन्न हुये। गोष्ठी के आयोजनकर्त्ता श्री नवीनभाई तेजानी व श्रीमती सुशीलाबेन तेजानी अमेरिका का विशेष सहयोग रहा।

अष्टाह्निका के पूर्व देवलाली में पण्डित अश्विनभाई मलाड एवं पण्डित शैलेषभाई तलोद के प्रवचनों का तथा **वापी (गुजरात)** में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचन का लाभ मिला।

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

पत्राचार पाठ्यक्रम की दिसम्बर 2017 के अंतिम सप्ताह में होने वाली द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम का विवरण निम्नानुसार है; परीक्षार्थी इसी के अनुसार तैयारी करें –

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष – 1. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 2
2. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 3

द्वितीय वर्ष – 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2
2. धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष – 1. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
2. रामकहानी + आप कुछ भी कहो

द्वितीय वर्ष – 1. मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय)
2. नयचक्र–पूर्वार्द्ध (निश्चय व्यवहार)
3. हरिवंशकथा + भ.महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीय वर्ष – 1. मोक्षमार्गप्रकाशक उत्तरार्द्ध (6 से 9 अध्याय)
2. नयचक्र–उत्तरार्द्ध (द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय प्रकरण)
3. शलाका पुरुष (सम्पूर्ण)

नोट : सभी परीक्षार्थियों को उनके प्रश्नपत्र केन्द्र/उनके पते पर दिसम्बर के तृतीय सप्ताह तक डाक द्वारा भेज दिये जायेंगे। यदि 25 दिसम्बर तक भी पेपर न मिले तो जयपुर कार्यालय से संपर्क करें।

स्मृति दिवस समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में मार्गशीर्ष कृष्ण सप्तमी को आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी का स्मृति दिवस समारोह मनाया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, डॉ. दीपकजी जैन वैद्य, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री आदि महानुभाव मंचासीन थे। सभी विद्वत्गणों ने अपने वक्तव्य के माध्यम से गुरुदेवश्री का स्मरण किया।

श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने गुरुदेवश्री को स्मरण करते हुए कहा कि जो मार्ग उन्होंने अपनाया वही मार्ग अपनाने पर हम सबका कल्याण होगा; वे सबकुछ छोड़कर मात्र आत्मकल्याण हेतु दिगम्बर धर्म में आये थे, उन्होंने विरोध होने पर भी तत्त्वज्ञान की चर्चा बंद नहीं की, गुरुदेवश्री के समान स्पष्ट दृष्टि रखने की आवश्यकता है।

पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने गुरुदेवश्री को स्मरण करते हुए कहा कि महापुरुषों के जीवन से उनके जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है, गुरुदेवश्री ने स्वाध्याय की परंपरा प्रारम्भ की और अध्यात्म को प्रतिष्ठापित किया।

डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य' ने गुरुदेवश्री से संबंधित श्रद्धा की दृढता व चारित्र के विवेक संबंधी दो संस्मरण सुनाये।

इसके अतिरिक्त अनुभव जैन खनियांधाना व शुभांशु जैन कोटा ने स्वरचित कविता का एवं अमन जैन दिल्ली ने बाबू युगलजी द्वारा रचित कविता का वाचन किया तथा दुर्लभ जैन गुढाचंद्रजी ने स्वरचित संस्कृत श्लोकों द्वारा गुरुदेवश्री का स्मरण किया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

परीक्षा तिथि निश्चित, प्रवेश फार्म शीघ्र भेजें

श्री वीतराग–विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) की शीतकालीन परीक्षायें दिनांक 26, 27 व 28 जनवरी 2018 को आयोजित की जावेगी।

जिन परीक्षा केन्द्रों ने छात्र प्रवेशफार्म भरकर अभी तक नहीं भेजे हैं, वे तत्काल परीक्षाबोर्ड कार्यालय को भेज देवें।

– विनीत शास्त्री (प्रबंधक–परीक्षा विभाग)

एनिमेटेड कहानियों की सी.डी उपलब्ध

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर द्वारा बच्चों हेतु शिक्षाप्रद लघु कहानियों की वीडियो डी.वी.डी. तैयार की गई है, जिसमें 35 एनिमेटेड कहानियाँ हैं। इसका मूल्य 15/– रुपये रखा गया है। यह सी.डी. पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जयपुर द्वारा तैयार की गई है।

प्राप्ति हेतु संपर्क करें – पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर– 302015 फोन – (0141) 2705581, 2707458

आगम के आलोक में –

समाधिमरण या सल्लेखना

8

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

मैं चैतन्य हूँ, इसीलिए ऐसा विचार करता हूँ कि आकाश जड़ है और मैं चैतन्य। मेरे द्वारा जानना प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है और आकाश नहीं जानता है।

'मैं कैसा हूँ।' मैं दर्पण की तरह स्वच्छ (स्वच्छत्व) शक्ति का ही पिण्ड हूँ। **दर्पण की स्वच्छ शक्ति में घट-पटादि पदार्थ स्वयमेव ही झलकते हैं। दर्पण में स्वच्छ (स्वच्छत्व) शक्ति व्याप्त रहती है वैसे ही मैं स्वच्छ शक्तिमय हूँ। मेरी स्वच्छ शक्ति में समस्त ज्ञेय पदार्थ स्वयमेव ही झलकते हैं।** ऐसी स्वच्छ शक्ति मेरे स्वभाव में विद्यमान है।[१]

मनुष्य पर्याय में शुद्धोपयोग का साधक, ज्ञानाभ्यास का साधन और ज्ञान-वैराग्य की वृद्धि आदि अनेक गुणों की प्राप्ति होती है जो कि अन्य पर्याय में दुर्लभ है, किन्तु अपने संयमादि गुण रहते हुए शरीर रहे तो रहो, वह तो ठीक ही है। शरीर से हमारा कोई बैर तो है नहीं।

यदि शरीर रहे तो अपने संयमादि गुण निर्विघ्न रूप से रखना और शरीर से ममत्व छोड़ना चाहिए। **हमें शरीर के लिए संयमादि गुण कदाचित् भी नहीं खोने हैं।**[२]

मुझे दोनों ही तरह आनन्द है - शरीर रहेगा तो फिर शुद्धोपयोग की आराधना करूँगा और शरीर नहीं रहेगा तो परलोक में जाकर शुद्धोपयोग की आराधना करूँगा।

इसप्रकार दोनों ही स्थिति में मेरे शुद्धोपयोग के सेवन में कोई विघ्न नहीं दिखता है। इसलिए मेरे परिणामों में संक्लेश क्यों उत्पन्न हो ?[३]''

पण्डित गुमानीरामजी के गद्य में प्रगट किये गये उक्त विचार, उनके गहरे अध्ययन और अध्यात्म की तीव्रतम रुचि को व्यक्त करते हैं।

१. मृत्यु महोत्सव, पृष्ठ-७८-७९
२. वही, पृष्ठ-८१-८२
३. वही, पृष्ठ-८३

वे एक गंभीर व्यक्तित्व के धनी महापुरुष थे। पण्डित टोडरमलजी के साथ जो कुछ भी घटित हुआ था, वह सब उन्होंने अपनी आँखों से देखा था। उसका गंभीर प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ा था।

उनकी इस कृति को आधार बनाकर पण्डित बुधजनजी ने पद्य में समाधिशतक नाम से एक कृति प्रस्तुत की है।

ये बुधजनजी वे ही हैं, जिन्होंने सबसे पहले छहढाला नामक कृति लिखी थी। जिसका उल्लेख पण्डित दौलतरामजी ने अपने छहढाला की प्रशस्ति में किया है।

बुधजनजी स्वयं लिखते हैं –

''देख गुमानीराम का, वचन रूप सुप्रबन्ध।
लघुमति ता संकोचि के, रचै सु दोहा छन्द।।
पिंगल व्याकरणादि कुछ, लखो नहीं मति बाल।
कंठ राखने के लिए, रचो बालवत ख्याल।।[१]

गुमानीरामजी का गद्य रूप ग्रन्थ देखकर मुझ अल्पबुद्धि ने बड़े ही संकोच के साथ दोहों (छन्दों) की रचना की है। व्याकरण, छन्द आदि मैंने कुछ नहीं देखे - ऐसे बालबुद्धि मैंने कंठस्थ रखने की सुविधा को ख्याल में रखकर बालबुद्धि से ये छन्द बनाये हैं।''

ध्यान रहे इसमें सभी छन्द दोहा नहीं हैं। दोहा शब्द का प्रयोग छन्द के अर्थ में हुआ है।

अब तक जीवन में यह होता था कि संयोग हमें छोड़कर चले जाते थे और अब मरण में संयोगों को छोड़कर हम जा रहे हैं।

जीवन में हम जहाँ के तहाँ रहते हैं और स्त्री-पुत्रादि संयोग हमें छोड़कर अन्यत्र जाते हैं तथा मरण में स्त्री-पुत्रादि सभी संयोग अपने स्थान पर रहते हैं और हम उन्हें छोड़कर चले जाते हैं।

बात तो एकसी ही है; तथापि अन्तर यह है कि जीवन में वे सभी एक साथ हमें नहीं छोड़ते थे; एक जाता है तो एक आता भी है, माता-पिता जाते हैं तो पुत्र-पुत्रियाँ आती हैं। वियोग का दुख तो तब भी होता ही है, पर एक साथ नहीं, एक-एक का धीरे-धीरे।

१. मृत्यु महोत्सव, पृष्ठ-१२०

पर मरण में सभी संयोग एक साथ छूटते हैं; इसलिये बात कुछ अलग हो जाती है।

यद्यपि इस भव के सभी संयोग छूट रहे हैं; तथापि अगले भव के सभी संयोग एकदम तैयार हैं। **हो सकता है हमारे पुण्य के योग से वे इनसे भी अच्छे हों; पर हमें पता नहीं है न। इसलिये दुःख कुछ ज्यादा ही होता है।**

यदि हमारा जीवन शुद्ध-सात्विक रहा है, पवित्र रहा है, धर्ममय रहा है तो आगामी संयोग गारन्टी से वर्तमान संयोगों से अच्छे होंगे और इन्हें छोड़े बिना वे मिलेंगे भी नहीं; अतः वर्तमान संयोगों को छोड़ने में संकोच नहीं करना चाहिये। पर एकत्व-ममत्व के कारण हमसे वर्तमान संयोग छोड़े नहीं जाते। ध्यान रहे **बिना मरे तो स्वर्ग मिलने वाला है नहीं। यदि स्वर्ग चाहिये तो इन्हें छोड़ने के लिये तैयार रहना ही होगा।**

उक्त सन्दर्भ में कविवर सूरचन्द्रजी के विचार दृष्टव्य हैं-

''मृत्यु मित्र उपकारी तेरो, इस अवसर के माहीं।
जीरन तन से देत नयो यह, या सम साहू नाहीं।।
या सेती इस मृत्यु समय पर, उत्सव अति ही कीजै।
क्लेश भाव को त्याग सयाने, समताभाव धरीजै।।
जो तुम पूरव पुण्य किये हैं, तिनको फल सुखदाई।
मृत्यु मित्र बिन कौन दिखावै, स्वर्ग संपदा भाई।।[१]

इस अवसर पर मृत्युरूपी मित्र तेरा उपकारी है। जीर्ण-शीर्ण शरीर के बदले एकदम नया शरीर देता है। इसके समान उपकारी साहूकार और कोई नहीं है।

इसलिये इस मृत्यु के अवसर पर उत्सव करना चाहिये। क्लेश भाव को त्यागकर समताभाव धारण करना चाहिये।

पूर्व काल में जो पुण्य आपने किये हैं; उनका सुख देनेवाला फल जो स्वर्ग की सम्पत्ति; वह मृत्यु के बिना कैसे प्राप्त होगी? इसलिये हे भाई! इस मृत्यु को स्वर्ग की सम्पदा दिलाने वाला मित्र समझो।''

अरे भाई! वर्तमान परिवार व देह को छोड़े बिना तो मुक्ति भी प्राप्त नहीं होती। यदि इसी देह और परिकर से चिपटे रहोगे तो मोक्ष या स्वर्ग कुछ भी नहीं मिलेगा। अतः समझदारी इसी में है कि समाधिमरण के माध्यम से इस ट्रांसफर (देह परिवर्तन के कार्य) को सहज ही स्वीकार कर लीजिये।

ज्ञानी धर्मात्माओं को तो मृत्यु सहज है। कोई बड़ी बात नहीं है। क्योंकि उन्हें तो पक्का भरोसा है कि यदि ये संयोग छूट रहे हैं तो भविष्य में इनसे अच्छे संयोग मिलेंगे।

दूसरे उन्हें संयोगों की विशेष चाह भी नहीं है। उनके लिये तो यह परिवर्तन साधारण सी घटना है; परन्तु इस **अज्ञानी जगत को इनमें अपनत्व होने से इनके वियोग की कल्पना भी बहुत आकुल-व्याकुल कर देती है।**

दूसरे अज्ञानीजनों को अपने पुण्य पर भी भरोसा नहीं है। उन्होंने अच्छे भाव रखे ही नहीं तो फिर पुण्य भी आयेगा कहाँ से? उन्हें लगता है - एकबार ये संयोग छूटे तो न मालूम नरक-निगोद में कहाँ जाना होगा। अतः वे इन्हीं संयोगों से चिपटे रहना चाहते हैं। **संयोगों के प्रति अत्यधिक आसक्ति ही मरणभय का मूल कारण है।**

यदि संयोगों में रंचमात्र भी अपनापन न हो तो फिर आत्मा का गया ही क्या है; क्योंकि आत्मा के असंख्य प्रदेश और अनन्त गुण तो उसके साथ ही जाते हैं।

जिन संयोगों के प्रति अपनापन नहीं होता, उनका कुछ भी हुआ करें, हमें कोई अन्तर नहीं पड़ता; परन्तु जिन संयोगों में अपनापन हो जाता है, उनके वियोग में दुख होता है। अतः यह निश्चित हुआ कि **पर में अपनापन ही अनन्त दुख का कारण है।**

वर्तमान संयोग भी हमारे पुण्य-पाप के उदय के अनुसार प्राप्त हुये हैं और अगले भव के संयोग भी हमारे पुण्य-पाप के उदय के अनुसार ही मिलने वाले हैं। क्या अन्तर है - इन दोनों में। बस बात इतनी सी ही है कि वर्तमान संयोग दिखाई दे रहे हैं और भविष्य के संयोग अभी सामने उपस्थित नहीं हैं। पर **ज्ञानीजनों को तो संयोगों में विशेष रस होता ही नहीं है। सहजभाव से जब जो संयोग जैसा उपलब्ध हो गया; तब तैसा वीतराग भाव से स्वीकार कर लेते हैं।**

(क्रमशः)

१. समाधि और सल्लेखना, पृष्ठ-४२

टोडरमल स्मारक के निर्देशन में पंचकल्याणक

(1) नागपुर (महा.) में **श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव** दिनांक 24 नवम्बर से 29 नवम्बर, 2017 तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में संपन्न होने जा रहा है।

इस पंचकल्याणक में तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा। सभी साधर्मीजन सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित पधारकर अवश्य लाभ लें।

(2) उदयपुर (राज.) में **श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव** दिनांक 2 दिसम्बर से 7 दिसम्बर, 2017 तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में संपन्न होने जा रहा है।

इस पंचकल्याणक में तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा। सभी साधर्मीजन सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित पधारकर अवश्य लाभ लें।

(3) ललितपुर (उ.प्र.) में **श्री 1008 महावीर दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव** दिनांक 12 फरवरी से 16 फरवरी, 2018 तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में संपन्न होने जा रहा है।

इस पंचकल्याणक में तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा। सभी साधर्मीजन सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित पधारकर अवश्य लाभ लें।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

14 से 19 नव. 2017	झालरापाटन	पंचकल्याणक
24 से 29 नव. 2017	नागपुर	पंचकल्याणक
2 से 7 दिसम्बर 2017	शाश्वतधाम-उदयपुर	पंचकल्याणक
22 से 24 दिसम्बर 2017	भीलवाड़ा	स्वाध्याय भवन का उद्घाटन एवं प्रवचनसार मंडल विधान
10 से 12 जन. 2018	मंगला.विश्व.-अलीगढ	सेमिनार
11 से 15 फर.-2018	ललितपुर	पंचकल्याणक
17 व 18 फर.-2018	श्रवणबेलगोला	महामस्तकाभिषेक
23 से 25 फर.-2018	जयपुर	वार्षिकोत्सव
28 फर.से 2 मार्च-2018	कोटा (मुमुक्षु आश्रम)	वार्षिक मेला (होली)
3 से 5 मार्च-2018	इन्दौर	प्रवचनसार विधान

श्रवणबेलगोला में राष्ट्रीय स्तर पर -

आदर्श जैन युवा सम्मान

डॉ. संजीवकुमार गोधा

डॉ. गौरव जैन सोगानी, जयपुर

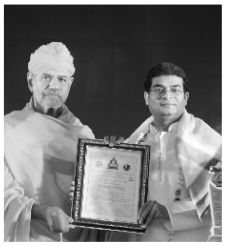

गौरव जैन शास्त्री, इन्दौर

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) : दिनांक 28 व 29 अक्टूबर,2017 को **राष्ट्रीय जैन युवा सम्मेलन** का आयोजन स्वस्तिश्री भट्टारक चारुकीर्ति महास्वामीजी के नेतृत्व में किया गया। युवा सम्मेलन उपसमिति के अध्यक्ष श्री प्रदीपसिंहजी कासलीवाल इन्दौर एवं मुख्य संयोजक श्री हंसमुखजी गाँधी इन्दौर थे।

इस आयोजन में भारतवर्ष के लगभग 250 नगरों से पधारे हुये 5 हजार युवाओं की उपस्थिति में जैन युवा प्रतिभाओं को राष्ट्रीय स्तर पर भट्टारक महास्वामीजी के करकमलों से प्रशस्ति भेंटकर सम्मानित किया गया। इस प्रसंग पर आयोजित सम्मान समारोह में -

● **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** को **विदेशों में जैनधर्म का सर्वाधिक प्रचार-प्रसार** करने हेतु यह राष्ट्रीय आदर्श जैन युवा सम्मान प्रदान किया गया। डॉ. गोधा द्वारा अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड आदि अनेक देशों में प्रतिवर्ष लगभग 2 माह जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया जाता है। आपने कई बार विदेशों में दिग. जैन धर्म का प्रतिनिधित्व किया है। यही सम्मान **श्री प्रकाशजी छाबडा इन्दौर** को भी दिया गया।

● **डॉ. गौरवजी सौगानी जयपुर** को आदर्श जैन युवा का यह राष्ट्रीय सम्मान **संगीत के क्षेत्र में** प्रदान किया गया। गौरवजी अंतरराष्ट्रीय युवा गायक, सा रे गा मा फेम तथा आध्यात्मिक भजनों के लोकप्रिय गायक हैं।

● **पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर** को **जैन शिक्षापद्धति के आधुनिकीकरण** हेतु राष्ट्रीय आदर्श जैन युवा सम्मान दिया गया। आपने विविध मोबाइल एप एवं सी.डी आदि का निर्माण करके जैन शिक्षा के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

प्रकाशन तिथि : 13 नवम्बर 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com